CLASS-25: Summary

1. हमने समझा कि हमारा शरीर शुभ-अशुभ रूप
    a. पिछले कर्मों के योगदान से होता है
2. सूत्र बाईस **योगवक्रता विसंवादनं चाशुभस्य नाम्नः** में
    a. हमने अशुभ नामकर्म के बंध के कारण
        i. **योगों की वक्रता**
        ii. और **विसंवाद** को जाना
    b. वक्रता यानि कुटिलता
        i. मन-वचन-काय का सरल नहीं होना
        ii. इनसे अलग-अलग प्रवृत्ति करना
3. दूसरों को हानि पहुँचा कर अपना उल्लू सीधा करना
    a. नाप-तौल घटती बढ़ती करना
    b. अधार्मिक तरीके से धन प्राप्त करना आदि
    c. सभी योगों की वक्रता, मन की कुटिलता में आते हैं
4. खास तौर से धर्म, धर्म आयतनों, धर्म गुरुओं या शास्त्रों के माध्यम से
    a. आजीविका चलाना भी कुटिलता है
    b. और पाप का कारण है
    c. जैसे इनमें दिए धन को हड़पना
    d. या शास्त्रों का क्रय-विक्रय करना
5. जिन प्रतिमाएँ/ओं, जिनायतनों को घात पहुँचाना
    a. आपसी राग-द्वेष के कारण इनकी चिंता नहीं करना
    b. वचनों से धार्मिकजन का हँसी-मजाक करना आदि भी इसमें आते हैं

6. हमने जाना कि **अशुभ नामकर्म से ही शरीर की अशुभ रचना** होती है
    a. और इसका बहुत बड़ा कारण पूर्व में बंधे अशुभ नामकर्म होते हैं
    b. जैसे अच्छे बच्चे का विकलांग होना
    c. बुद्धि कम होना

d. या मुँह टेढ़ा-मेढ़ा होना आदि

7. पिछले जन्म के तीव्र कर्म के फल से व्यक्ति, जन्म से भी
    a. या किसी दुर्घटना के बाद लंबे समय तक
    b. विकलांगता, लकवा आदि बीमारीयाँ से ग्रसित हो सकता है
    c. जिससे पूरा जीवन पराश्रित होकर निकलता है
8. कुछ लोगों को देख कर स्पष्ट समझ में आता है
    a. कि इन्होंने पिछले जन्म में अच्छे कर्म किये थे
    b. तभी मनुष्य जन्म, अच्छा जैन कुल मिला
    c. लेकिन कभी शरीर का मद किया होगा
    d. इसलिए चेहरे पर विकृतियाँ हैं
9. चाहे बचपन जैसी हंसी मजाक हो
    a. या नीचा दिखाने वाली कुटिल वृत्तियाँ
    b. जो हावभाव, शरीर के टेढ़े-मेढ़े expression
    c. हम करते हैं
    d. वैसे की कर्मों का बंध होता है
    e. और आगे वैसा ही शरीर हमें ढोना पड़ता है
    f. यह एक विज्ञान है

10. अशुभ नामकर्म का दूसरा कारण है **विसंवादन**
    a. जहाँ योगों की वक्रता स्व के लिए होती है
    b. विसंवादन में अन्यथा प्रवृत्ति होती है
    c. जैसे किसी को सन्मार्ग से भटका कर मिथ्यामार्ग पर लगाना
11. इसमें मुख्यता है
    a. दूसरे के साथ किए गए दुर्व्यवहार की
    b. सही मार्ग से हटाने की
    c. वाद-विवाद करके गलत को सही
        i. या सही को गलत सिद्ध करने की
    d. जैसे अंडा के शाकाहारी होने के

i. या वनस्पति के मांसाहार होने के कुतर्क देना

12. विसंवाद में लड़ाई-झगड़ा नहीं है

a. बस अपने कथन से दूसरे को अन्यथा प्रवृत्ति कराना है

b. व्यक्ति को धर्म कार्य से बिचकाना है

i. जैसे धर्म करने से, आलू छोड़ने से क्या होता है?

ii. ऐसे कुतर्कों से उसमें अरुचि पैदा कराना

iii. उसे picture hall आदि में घुमाने ले जाना

13. मन में अपने लिए और दूसरे के साथ

a. कुटिलता का व्यवहार ही अशुभ नामकर्म के आस्रव के दो प्रमुख कारण हैं

14. सूत्र तेईस **तद्विपरितं शुभस्य** में हमने जाना के इसके विपरीत

a. योगों की सरलता

b. किसी को अपनी प्रवृत्तियों से सन्मार्ग से नहीं हटाना

c. ~~अपनी~~ आत्मनिंदा और दूसरों के गुणों की प्रशंसा करना आदि

d. से **शुभ नामकर्म** का आस्रव होता है

15. शास्त्रों में सम्यग्दृष्टि का भी यही लक्षण बताया जाता है

16. कार्तिकेय अनुप्रेक्षा ग्रंथ के अनुसार '**अप्पाणं निंदन्तो**'

a. अर्थात सम्यग्दृष्टी हमेशा अपनी निंदा करता है

b. जैसे हे भगवन! मैं तो ज्ञान लेकर भी पाप नहीं छोड़ पा रहा हूँ आदि

17. हमने जाना कि **आत्मनिंदा करने से सरलता** आती है

a. सरल व्यक्ति दूसरों के समक्ष भी अपनी गलती स्वीकार लेता है

b. लेकिन कठोर व्यक्ति आत्मनिंदा भी नहीं कर पाता

18. जिनके शुभ नामकर्म का आस्रव होता है

a. वे दूसरों के गुणों की प्रशंसा करते हैं

b. आत्मनिंदा करते हैं

c. अपनी प्रशंसा में रस नहीं लेते हैं

d. किसी को भी ~~न~~ विपरीत मार्ग पर नहीं चलाते

e. उन्हें सन्मार्ग पर लगाते हैं